अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

बिहुला विषहरी लोक नाटक में आहार्य का महत्व

Research Scholar (शोधार्थी)
आनंद विजय (23VU4939)
विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालिया, मध्य प्रदेश
9155930778, 7004609053
anandvijay281995@gmail.com

सारांश

बिहुला बिषहरी अंग प्रदेश(बिहार के मुंगेर,भागलपुर, पूर्णिया,बांका जिला इसके अंतर्गत आते हैं।) का एक प्रसिद्ध लोक नाटक है, जो महिला की हिम्मत, उसकी भक्ति और लोक आस्था को दर्शाता है। इस नाटक में जो कपड़ा-लत्ता, गहना-गुरिया, सजावट, और रंग-बिरंगी चीजें इस्तेमाल होती हैं, उसे ही आहार्य कहते हैं। आहार्य कोई साधारण चीज नहीं होती – ये नाटक के किरदारों की पहचान बनती है, और बिना बोले ही बहुत कुछ कह जाती है।

बिहुला के लाल पीले कपड़े, बिषहरी के सांप जैसे रूप, मंच पर नाव, कलश, और फूलों की सजावट – सब मिलकर नाटक के माहौल को सजीव बनाते हैं। इस नाटक में कई जगह मंजूषा चित्रकला भी दिखाई देती है, जो कि भागलपुर की लोक पेंटिंग है और इसमें देवी, नाग, नाव आदि के चित्र बनाए जाते हैं।

आजकल कुछ लोग इस नाटक को नए ढंग से मंचित कर रहे हैं, पर सवाल ये उठता है कि क्या नए जमाने के कपड़े-साजो-सज्जा, इस परंपरागत नाटक की आत्मा को कमजोर तो नहीं कर रहे?

इस शोध में शोधकर्ता बिहुला विषहरी लोकनाटक का विश्लेषणात्मक तथा अनुभवतमक अवलोकन किया है तथा इसका उद्देश्य आहार्य कैसे नाटक को लोक जीवन से जोड़ता है, और इसका क्या मतलब होता है आम दर्शक के लिए। साथ ही यह भी समझने की कोशिश की गई है कि इस परंपरा को बचाते हुए इसमें कैसे नए प्रयोग किए जा सकते हैं।

मुख्य शब्द: अंग क्षेत्र, बिहुला बिषहरी, लोक नाटक, आहार्य, मंजूषा कला।

बिहुला बिषहरी लोक नाटक : परिचय

बिहुला बिषहरी लोक नाटक भारत के पूर्वी भागों में प्रचलित एक अत्यंत लोकप्रिय और भावनात्मक लोकनाट्य परंपरा है, जो विशेष रूप से नारी शक्ति, भक्ति और लोक आस्था पर आधारित है। यह लोकनाटक बिहार के अंग क्षेत्र – अर्थात् मुंगेर, भागलपुर, पूर्णिया और बांका जिलों में बड़े ही श्रद्धा भाव से खेला जाता है।

इस नाटक की कथा की जड़ें बंगाल की लोक गाथाओं, विशेष रूप से मनसा देवी की पूजा पर आधारित पौराणिक प्रसंगों में मिलती हैं। बंगाल के मालदा ज़िले में आज भी मान्यता के अनुसार पूजा और साथ-साथ लोकनाटक का आयोजन हर वर्ष होता है।

बिहुला बिषहरी नाटक की एक और विशेषता यह है कि यह सिर्फ बिहार या बंगाल तक सीमित नहीं है,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

बल्कि इसका प्रभाव झारखंड, ओडिशा और असम जैसे राज्यों में भी देखने को मिलता है। वहाँ भी विभिन्न समुदायों द्वारा पूजन अनुष्ठान के साथ-साथ इस कथा का मंचन किया जाता है।

इस लोकनाटक में प्रमुख रूप से बिहुला, जो अपने मृत पति लखिन्दर को लेकर नाव से यात्रा करती है, और मनसा देवी, जो नागों की देवी हैं, के बीच का संवाद, संघर्ष और अंततः मुक्ति का भाव दर्शाया जाता है। कथा को गीतों, संवादों, लोक धुनों और अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

यह लोकनाट्य न केवल आध्यात्मिक अनुभव है, बल्कि यह क्षेत्रीय लोकसंस्कृति, चित्रकला (जैसे मंजूषा), लोक संगीत और आहार्य परंपरा का भी जीवंत उदाहरण है।

मुख्य पात्र:

चाँद सौदागर – शिवभक्त, घमंडी व्यापारी जो मनसा देवी को नहीं मानता

मनसा देवी (बिषहरी) – नागों की देवी, जिन्होंने चाँद से पूजा की अपेक्षा की

सन्हा देवी – चाँद की पहली पत्नी

लखिन्दर (लखिन्दर नाथ) – चाँद का बेटा

बिहुला – लखिन्दर की पत्नी, कथा की नायिका

कलिया नाग – मनसा देवी का भेजा हुआ साँप

बिहुला विषहरी कथा :

चाँद सौदागर एक बड़ा व्यापारी था। वह भगवान शिव का कट्टर भक्त था और देवी मनसा को नहीं मानता था। जब मनसा देवी ने उससे पूजा करवानी चाही, तो उसने अपमानजनक ढंग से मना कर दिया। इससे क्रोधित होकर देवी ने उसके सभी छह बेटों को मार डाला। फिर जब चाँद की दूसरी पत्नी से लखिन्दर जन्मा, तो चाँद ने उसे साँप-प्रूफ लोहे के महल में बंद करवा दिया ताकि कोई नाग उसे डस न सके।

लखिन्दर की शादी बिहुला नाम की एक सुशील, सुंदर और साहसी कन्या से हुई। शादी के बाद, जब दोनों नवविवाहित थे, उसी रात मनसा देवी ने कलिया नाग को भेजा, जिसने लखिन्दर को डसकर मार डाला। बिहुला को इस दुर्घटना का पूर्वाभास हो गया था, फिर भी वह कुछ न कर सकी।

पति की लाश को लेकर बिहुला ने नाव में अकेले गंगा यात्रा शुरू की। उसका संकल्प था कि वह अपने पति को पुनर्जीवित करवा कर ही लौटेगी। वह कई देवताओं के स्थानों पर गई, तप किया, दुख सहा, भूखी-प्यासी रही, पर हार नहीं मानी। उसके त्याग, भक्ति और धैर्य को देखकर देवता भी प्रभावित हो गए।

बिहुला की भक्ति और तपस्या से मनसा देवी पिघल गईं। उन्होंने भगवान शिव और अन्य देवताओं को मनाया और लखिन्दर को फिर से जीवित कर दिया गया। यह चमत्कार हुआ और बिहुला पति के साथ घर लौटी।

आख़िरकार, चाँद सौदागर को झुकना पड़ा। उसने देवी मनसा की पूजा स्वीकार की। इस प्रकार देवी को वह मान्यता और श्रद्धा मिली जिसकी वे हकदार थीं। वहीं, बिहुला नारी संकल्प और शक्ति की प्रतीक बन गई।

प्रयोग किए जाने वाले वाद्ययंत्र : बिहुला बिषहरी लोकनाटक में संगीत की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। लोकनाटक के गीत, संवाद, नृत्य और मंच प्रभाव को सशक्त बनाने में वाद्ययंत्रों का विशेष योगदान होता

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

है। ये वाद्ययंत्र न केवल ध्वनि का सौंदर्य रचते हैं, बल्कि नाटक की भावनात्मक, धार्मिक और नाटकीयता को भी गहराई प्रदान करते हैं।

सुशिर वाद्ययंत्र : विवाह, पूजा और मंगल प्रसंगों के साथ देवी आगमन के दृश्यों में शहनाई की मधुर ध्वनि नाटक में आध्यात्मिकता और लोकभक्ति का वातावरण तैयार करती है। चमर खानी (बाँसुरी या लोक शहनाई जैसा वाद्य)

यह पारंपरिक वाद्य, विशेषकर अंग क्षेत्र के लोक कलाकारों द्वारा, प्रयोग किया जाता रहा है। इसमें मृदु और करुण स्वर होते हैं, जो बिहुला के दुःख और संघर्ष के दृश्यों को भावपूर्ण बनाते हैं।

अवनद्ध वाद्ययंत्र (चमड़ी वाले वाद्य) : लोकनाट्य का प्रमुख ताल वाद्य है। नृत्य, युद्ध दृश्य, देवी का प्रकट होना या बिहुला की यात्रा के समय, ढोल की ताल से उत्साह और नाटकीयता बढ़ती है। नगाड़ा और मृदंग (कुछ क्षेत्रों में) विशेष दृश्यों में भारी ध्वनि उत्पन्न करने हेतु नगाड़े का प्रयोग होता है।

घन वाद्ययंत्र : झाल (झांझ) , देवी पूजन के समय झाल की ध्वनि से एक धार्मिक वातावरण बनता है। यह वाद्य पूजा और आरती के समय प्रयोग किया जाता है।

चिमटा, यह एक लोक ध्वनि देने वाला साधारण लेकिन प्रभावशाली वाद्य है, जिसे ग्रामीण कलाकार अपनी गायन शैली के साथ बजाते हैं।

बिहुला विषहरी लोक नाटक में आहार्य :

हर कला की भांति, बिहुला बिषहरी लोक नाटक में भी आहार्य अभिनय का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह नाट्यकला का वह पक्ष है, जो दृश्य माध्यमों, जैसे वेशभूषा, श्रृंगार, रंग संयोजन, आभूषण, मंच सज्जा, प्रतीकात्मक वस्तुएँ और लोक शिल्प के माध्यम से कथा को सजीव करता है और दर्शकों के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ता है। आहार्य केवल सौंदर्य-वर्धन का साधन नहीं, बल्कि यह पात्रों की पहचान, उनके भाव, सामाजिक स्थिति और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को मूर्त रूप देने का भी माध्यम है।

नाट्यशास्त्र के रचयिता भरतमुनि ने अपने ग्रंथ के इक्कीसवें अध्याय में आहार्य अभिनय की विस्तृत चर्चा करते हुए इसे नाट्य के चार मुख्य अंगों "आंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्त्विक" में से एक माना है। उनके अनुसार, आहार्य अभिनय वह घटक है जो नाटक के दृश्य पक्ष को आकार देता है और रंगों, वस्त्रों तथा दृश्य संरचनाओं के माध्यम से पात्रों के चरित्र, मनोदशा और परिवेश को दर्शकों तक पहुँचाता है। यह न केवल पात्र की सामाजिक पहचान और मानसिक अवस्था का द्योतक है, बल्कि नाट्य प्रस्तुति की प्रामाणिकता और भावात्मक गहराई को भी बढ़ाता है।

बिहुला बिषहरी लोक नाटक में आहार्य का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि यह लोकनाट्य धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक प्रतीकों से परिपूर्ण है। देवी बिषहरी का दिव्य रूप, बिहुला का सतीत्व, गंगा नदी की यात्रा, मृत्यु का करुण दृश्य और पुनर्जीवन का चमत्कार—इन सभी प्रसंगों में आहार्य अभिनय कथा को जीवन्त बनाने में निर्णायक भूमिका निभाता है। वेशभूषा और श्रृंगार से लेकर मंच सज्जा और प्रतीकात्मक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

वस्तुओं तक, हर तत्व दर्शकों को उस लोक-संसार में ले जाता है, जहाँ मिथक और लोकविश्वास वास्तविकता की तरह सजीव प्रतीत होते हैं। इस प्रकार, आहार्य अभिनय केवल दृश्य प्रभाव का साधन नहीं, बल्कि लोककथा के भाव, अर्थ और सांस्कृतिक स्मृति को मंच पर मूर्त रूप देने वाला सशक्त माध्यम है।

भरतमुनि के अनुसार आहार्य अभिनय के प्रकार

आहार्य अभिनय, भरतमुनि के *नाट्यशास्त्र* में वर्णित चार प्रमुख प्रकार के अभिनय में से एक है, जो नाट्य के दृश्य और बाह्य पक्ष से संबद्ध है। 'आहार्य' शब्द संस्कृत धातु 'आ-हृत्य' से निर्मित है, जिसका शाब्दिक अर्थ है, 'बाहर से लाकर सजाना'। यह परिभाषा इस बात की ओर संकेत करती है कि आहार्य अभिनय वह तत्व है, जो बाहरी सज्जा, वेशभूषा, आभूषण, रंग संयोजन, मंच सज्जा, चित्र और प्रतीकों के माध्यम से नाट्य प्रस्तुति को जीवंत रूप प्रदान करता है। इसका उद्देश्य केवल मंच को सुंदर बनाना नहीं, बल्कि पात्रों की पहचान, उनकी मनोदशा और नाट्य के वातावरण को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करना भी है।

भरतमुनि ने *नाट्यशास्त्र* के इक्कीसवें अध्याय में आहार्य अभिनय को चार प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया है : **पुस्त, अलंकार, अंगरचना और सजीव**।

पहली श्रेणी, **पुस्त (Pusta)**, में स्थापत्य और मंच सज्जा का समावेश होता है। इसमें दृश्यपटल, प्रतीकात्मक संरचनाएँ, मंच पर प्रयुक्त पृष्ठभूमि और दृश्य वस्तुओं का संयोजन शामिल है, जिनके माध्यम से कथा के स्थान, समय और भाव का आभास कराया जाता है।

दूसरी श्रेणी, **अलंकार (Alankara)**, वस्त्र, आभूषण और श्रृंगार से संबंधित है। इसमें रंगों का चयन, कपड़ों का प्रकार, आभूषणों का प्रतीकात्मक प्रयोग और श्रृंगार की बारीकियाँ आती हैं, जो पात्र की सामाजिक, धार्मिक और भावनात्मक स्थिति को स्पष्ट करती हैं।

तीसरी श्रेणी, **अंग रचना (Aṅga Rachana)**, में कृत्रिम शरीर अंगों और रंग-रूप का निर्माण सम्मिलित है। इसमें नकली अंग, मुखौटे, रंग-रूपांतरण और शरीर को प्रतीकात्मक स्वरूप देने की तकनीकें शामिल होती हैं, जिनका प्रयोग पात्र के हास्य, भय, अलौकिकता या दैवीय स्वरूप को प्रकट करने के लिए किया जाता है।

चौथी और अंतिम श्रेणी, **सजीव (Sajiva)**, जीवित तत्वों के प्रयोग पर आधारित है। इसमें जीवित पशु-पक्षी, पौधे या अन्य सजीव प्रतीकों को मंच पर सम्मिलित कर यथार्थ और प्रतीकात्मकता का सम्मिश्रण प्रस्तुत किया जाता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

बिहुला बिषहरी लोक नाटक में 'पुस्त' (स्थापत्य/मंच सज्जा) का महत्व

भरतमुनि के *नाट्यशास्त्र* में आहार्य अभिनय के चार अंगों में 'पुस्त' को प्रथम और अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। 'पुस्त' का अभिप्राय केवल भौतिक मंच सज्जा से नहीं है, बल्कि यह वह माध्यम है जिसके द्वारा नाटक की दृश्य-रचना की जाती है, पात्रों के परिवेश को मूर्त रूप दिया जाता है और सांकेतिकता के माध्यम से कथा के भावों का विस्तार किया जाता है। यह न केवल दर्शकों के लिए दृश्य आनंद उत्पन्न करता है, बल्कि उन्हें नाटक की कथा में भावनात्मक रूप से संलग्न करने का कार्य भी करता है।

बिहुला बिषहरी लोक नाटक में 'पुस्त' का प्रयोग केवल सौंदर्यात्मक साज-सज्जा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह धार्मिक, सामाजिक और भावनात्मक प्रसंगों के सशक्त चित्रण का साधन बन जाता है। उदाहरण के लिए, बिहुला की गंगा यात्रा के मंचन में नदी के प्रवाह को दर्शाने के लिए नीले रंग के वस्त्र, लहरदार कागज़ या कपड़े का उपयोग किया जाता है। लकड़ी, बाँस या रंगीन कपड़े से निर्मित नाव, सती स्त्री के संकल्प और धैर्य का प्रतीक बनकर मंच पर स्थापित होती है। यह दृश्य रचना दर्शकों को कथा के भाव-जगत में डुबो देती है और यात्रा के आध्यात्मिक एवं साहसिक पहलू को उजागर करती है।

इसी प्रकार, बिषहरी देवी के मंच पर प्रवेश के लिए सर्प-आकृति वाले यान का निर्माण किया जाता है, जिस पर देवी विराजमान होती हैं। यह यान लकड़ी, थर्माकोल या कागज़-मशीन से बनाया जाता है और प्रायः मंच के ऊँचे भाग से देवी का आगमन 'ऊर्ध्वगामी' रूप में दिखाया जाता है। यह प्रस्तुति दर्शकों के मन में दैवीय भय, श्रद्धा और विस्मय की भावना उत्पन्न करती है।

स्वर्गलोक अथवा ब्रह्मलोक का चित्रण भी 'पुस्त' का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। इसके लिए सफेद अथवा सुनहरे पर्दों का प्रयोग किया जाता है, जिन पर मालाओं की सजावट और दीपों का प्रकाश होता है। ऊँचे मंच पर त्रिदेवों का आसन और पुष्पवर्षा के प्रतीकात्मक दृश्य दिव्यता और मुक्ति के भाव को सशक्त बनाते हैं।

मृत लखिन्दर की शय्या भी एक महत्वपूर्ण पुस्त-रचना है, जिसमें सफेद चादर में लिपटा शव, दीप, फूल और करुण वाद्य ध्वनियाँ शामिल होती हैं। यह दृश्य न केवल बिहुला के संघर्ष और पीड़ा को मूर्त रूप देता है, बल्कि दर्शकों के हृदय में गहरी संवेदना भी जगाता है।

पूजा स्थलों और देवी के आसन की रचना में बांस या लकड़ी से निर्मित चौकीनुमा संरचना, कलश, नारियल, पुष्पमालाएँ और दीपक शामिल होते हैं। इसे 'बिषहरी स्थान' कहा जाता है, जो दर्शकों के लिए श्रद्धा और भक्ति का केंद्र बन जाता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

चाँद सौदागर के व्यापारिक जीवन को मंच पर दर्शाने के लिए बोरे, कपड़े के गठ्ठर, नाव, माल, सीप और व्यापारिक झंडों का संयोजन किया जाता है। यह सज्जा उनके वैभव, घमंड और भौतिक सम्पन्नता का प्रत्यक्ष संकेत देती है।

अंततः, देवी मनसा के मंदिर या 'थान' की रचना भी 'पुस्त' का अभिन्न हिस्सा है। इसमें बांस की छतरीनुमा संरचना, हरे और लाल वस्त्र, नाग आकृति की मूर्ति अथवा चित्र का मंचन किया जाता है। इसे प्रायः नाटक की शुरुआत अथवा अंतिम दृश्य में प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है, जिससे कथा का धार्मिक एवं सांस्कृतिक भाव चरम पर पहुँचता है।

इस प्रकार, बिहुला बिषहरी लोक नाटक में 'पुस्त' केवल दृश्य सज्जा नहीं है, बल्कि यह कथा के भावात्मक, धार्मिक और सांस्कृतिक अर्थों को विस्तार देने वाला सजीव माध्यम है, जो दर्शकों को नाटक के अनुभव में डुबो देता है और लोक नाट्य की परंपरा को जीवंत बनाए रखता है।

बिहुला विषहरी लोक नाटक में अलंकार का महत्व

बिहुला विषहरी लोक नाटक में अलंकार केवल सौंदर्य-वृद्धि का साधन मात्र नहीं हैं, बल्कि वे पात्रों की पहचान, उनके भाव और सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम हैं। इनमें विशेष स्थान पुष्पमालाओं का है, जो नाटक के अलग-अलग प्रसंगों में विभिन्न भावनाओं और प्रतीकों का प्रतिनिधित्व करती हैं। देवी बिषहरी के मंच पर प्रकट होने के समय उनके गले में नाग-प्रतीक पुष्पमालाएँ, धतूरा, बेला, दूर्वा और सफेद पुष्पों की माला होती है। यह श्रृंगार न केवल उनके देवी स्वरूप को उजागर करता है, बल्कि नाग-परंपरा से उनके गहरे संबंध का भी संकेत देता है। इसी प्रकार, विवाह प्रसंग में बिहुला गेंदे, बेला और गुलाब की मालाएँ पहनती है, जो सुहाग, पवित्रता और मंगलकामना का प्रतीक मानी जाती हैं। इसके विपरीत, शवयात्रा अथवा करुण प्रसंगों में सूखी या मुरझाई हुई मालाओं का प्रयोग वातावरण में शोक और व्यथा का संचार करता है। इस प्रकार, पुष्पमालाएँ बिहुला विषहरी नाट्य परंपरा में श्रृंगार और प्रतीकात्मकता — दोनों की भूमिका निभाती हैं।

लोकनाट्य में वस्त्र-विन्यास का भी विशेष महत्व है। यहाँ वस्त्र केवल शरीर को ढकने का माध्यम नहीं, बल्कि पात्र की सामाजिक, धार्मिक और भावनात्मक स्थिति का दृश्य संकेत होते हैं। उदाहरणार्थ, बिहुला को प्रायः लाल या पीली पारंपरिक साड़ी में मंचित किया जाता है। सिर पर पल्ला, मांग में सिंदूर और काँच की चूड़ियों के साथ यह परिधान उसकी सती, श्रद्धालु और दृढ़ नारी की छवि को प्रकट करता है। देवी बिषहरी के वस्त्रों में हरा, काला या नीला रंग प्रमुख होता है, जिन पर नाग आकृतियों का अंकन किया जाता है, तथा कंधे पर साँप का चित्र या प्रतीकात्मक बेल होती है। यह वेशभूषा उन्हें नाग-देवी के रूप में स्थापित करती है

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

और भय तथा भक्ति दोनों का भाव संचारित करती है। चाँद सौदागर का परिधान धोती, चादर और सिर पर साफा या पगड़ी से युक्त होता है, जिसमें सुनहरे किनारों का प्रयोग उनके वैभव और घमंड का प्रतीक है।

इसी प्रकार, पारंपरिक आभूषणों का प्रयोग भी पात्रों की भूमिका को जीवंत करता है। बिहुला के श्रृंगार में पायल, बिछुआ, कर्णफूल, नथ, कंगन और टीका शामिल होते हैं, जो सुहागिन स्त्री के प्रतीक माने जाते हैं। देवी बिषहरी के आभूषणों में नागमुकुट, हार, बाजूबंद और गले में सर्पों की माला प्रमुख है, जो उनकी दैवी शक्ति, रहस्य और नाग संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। नागिन पात्रों के लिए कमरबंद में सर्प की आकृति और कर्णों में नागाकार झुमके का प्रयोग किया जाता है, जबकि ग्राम देवी के रूप में मंचित पात्र चमकीले वस्त्र पहनती हैं, माथे पर त्रिशूल या सर्प का चिह्न बनता है और सिंदूर की चौड़ी रेखा उनके माथे को विभूषित करती है। इन आभूषणों और वेशभूषाओं का उद्देश्य केवल अलंकरण नहीं, बल्कि लोक आस्था और देवी की भव्यता का दृश्य प्रभाव रचना है।

अलंकारों के माध्यम से भाव संप्रेषण की प्रक्रिया भी अत्यंत सशक्त है। विवाह दृश्य में गहनों की चकाचौंध उत्सव और आनंद का वातावरण निर्मित करती है, जबकि विधवा रूप में बिहुला का सभी आभूषण त्यागना त्याग, करुणा और विषाद का भाव उत्पन्न करता है। इसी तरह, देवी बिषहरी के अलंकारों में परिवर्तन, जैसे क्रोधावस्था में लाल वस्त्र और शांत अवस्था में सफेद वस्त्र — दर्शकों को भाव परिवर्तन का स्पष्ट संकेत प्रदान करता है।

धार्मिक प्रतीक और क्षेत्रीय विशिष्टता भी बिहुला विषहरी लोक नाट्य के अलंकरण में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। आधुनिक प्रस्तुतियों में वस्त्रों पर मंजूषा चित्रकला का प्रयोग देखने को मिलता है, जिसमें नाग, कमल, कमंडल आदि धार्मिक प्रतीकों का अंकन किया जाता है। देवी के श्रृंगार में क्षेत्रीय लोकविश्वास और परंपराओं की झलक साफ दिखाई देती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अलंकार यहाँ केवल दृश्य सौंदर्य का माध्यम नहीं, बल्कि लोक चेतना और सांस्कृतिक स्मृति को जीवित रखने वाला तत्व भी है। इस प्रकार, अलंकरण बिहुला विषहरी लोक नाटक का वह आयाम है, जो मिथकीय कथा के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक धरोहर को भी मंच पर सजीव करता है।

बिहुला बिषहरी लोक नाटक में अंग रचना का महत्व

अंग रचना नाट्यकला का वह अंग है, जिसमें पात्रों के शरीर या चेहरे को कृत्रिम अथवा प्रतीकात्मक रूप देकर उनके चरित्र, स्वभाव और दैवीय स्वरूप को जीवंत किया जाता है। भरतमुनि के अनुसार, यह आहार्य अभिनय की एक महत्त्वपूर्ण उपश्रेणी है, जो मंचन के दृश्य पक्ष को विशिष्टता प्रदान करती है। बिहुला बिषहरी लोक नाटक में अंग रचना का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि इसमें मानव, दैवी, अलौकिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

और हास्य—सभी प्रकार के पात्र सम्मिलित होते हैं। प्रत्येक पात्र के व्यक्तित्व को दर्शकों तक स्पष्ट और प्रभावी रूप में पहुँचाने के लिए अंग रचना का रचनात्मक एवं सांकेतिक प्रयोग किया जाता है।

इस नाट्य परंपरा में हास्य पात्र, विशेषकर विदूषक की प्रस्तुति में अंग रचना की भूमिका अत्यंत उल्लेखनीय है। विदूषक का रूप विन्यास इस प्रकार किया जाता है कि वह मंच पर आते ही दर्शकों को हँसी की दुनिया में ले जाए। उसके शरीर पर कपास या कपड़े से भरा हुआ बड़ा गोल कृत्रिम पेट बाँधा जाता है, जिससे उसकी चाल-ढाल में हास्य पैदा हो। चेहरे पर चोंच जैसी नकली नाक, टेढ़े दाँत और कभी-कभी गंजा सिर उसे एक अनोखा, विकृत और मनोहर रूप प्रदान करते हैं। यह संयोजन न केवल हास्य रस को सजीव करता है, बल्कि दर्शकों के मन में पात्र की छवि स्थायी रूप से अंकित कर देता है।

अंग रचना का प्रयोग केवल हास्य के लिए ही नहीं, बल्कि भय और रहस्य के वातावरण के निर्माण हेतु भी किया जाता है। मंच पर लकड़ी, थर्माकोल, मिट्टी या प्लास्टिक से बनी कृत्रिम मानव हड्डियाँ और कंकाल रखे जाते हैं, जिन्हें रंगाई-सज्जा द्वारा असली जैसा रूप दिया जाता है। कुछ प्रस्तुतियों में पुराने जानवरों की वास्तविक हड्डियों का भी सांकेतिक उपयोग किया जाता है, जिससे दृश्य की प्रामाणिकता और प्रभावशीलता बढ़ जाती है।

कथा के करुण और भयावह प्रसंगों में, जैसे कटे हुए हाथ, पैर या खोपड़ी का प्रदर्शन, अंग रचना के माध्यम से किया जाता है। इन्हें रबर, कपड़े और रंग के संयोजन से इस प्रकार निर्मित किया जाता है कि वे यथार्थ के निकट प्रतीत हों। ऐसे दृश्य, जब धीमी प्रकाश व्यवस्था और ध्वनि प्रभावों—जैसे कराह की आवाज़, हवा की सनसनाहट या तानपूरे की मंद धुन—के साथ मंचित होते हैं, तो दर्शकों के भावजगत पर गहरा असर डालते हैं।

इस लोक नाट्य में अंग रचना के लिए स्थानीय शिल्प और संसाधनों का विशेष महत्व है। ग्रामीण कलाकार सीमित साधनों के बावजूद अद्भुत कौशल के साथ आवश्यक सामग्री का निर्माण करते हैं। कई बार इन कृत्रिम संरचनाओं पर क्षेत्रीय कला, जैसे मंजूषा चित्रकला, का रेखांकन भी किया जाता है—उदाहरण के लिए, हड्डियों पर साँप की आकृतियाँ बनाना, जिससे दृश्य में धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकवाद जुड़ जाता है।

इस प्रकार, बिहुला बिषहरी लोक नाटक में अंग रचना केवल दृश्य सौंदर्य या चौंकाने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह पात्र की आंतरिक प्रकृति, भावनात्मक स्थिति और कथा के सांस्कृतिक संदर्भ को सशक्त रूप से व्यक्त करने का माध्यम है। यह नाटक के रस-निर्माण में एक अनिवार्य तत्व के रूप में कार्य करता है, जो दर्शकों के मन पर स्थायी प्रभाव छोड़ता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

साहित्य समीक्षा

डॉ. अमरेंद्र की पुस्तक "अंग लोक संस्कृति और मंजूषा कला

लोक कला और संस्कृति पर आधारित शोध कार्यों की दृष्टि से डॉ. अमरेंद्र की पुस्तक "अंग लोक संस्कृति और मंजूषा कला" एक महत्त्वपूर्ण कृति मानी जाती है। इस पुस्तक में लेखक ने अंग क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, लोक विश्वासों, लोक कलाओं एवं परंपराओं का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया है। विशेषकर उन लोक कलाओं पर भी प्रकाश डाला गया है जो अब वर्तमान समाज में लगभग विलुप्ति की कगार पर हैं, परंतु कभी जनजीवन का अभिन्न हिस्सा रही हैं।

डॉ. अमरेंद्र ने अपने लेखन में यह दर्शाया है कि कैसे अंग प्रदेश की सांस्कृतिक धारा में बिहुला–विषहरी कथा, मंजूषा चित्रकला, गीत, व्रत-कथाएँ, लोक नाट्य एवं अन्य मौखिक परंपराएँ आज भी सामाजिक स्मृति में जीवित हैं, भले ही उनका प्रत्यक्ष प्रदर्शन कम हो गया हो। उनका यह कथन शोधार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है कि लोक परंपराएँ केवल वर्तमान में नहीं, बल्कि अतीत की स्मृति और भविष्य की संस्कृति की नींव भी होती हैं।

इस पुस्तक के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बिहुला–विषहरी मूर्तिकला भी ऐसी ही एक कला है, जो जनमानस की श्रद्धा, भय और विश्वास से जुड़ी हुई है और जिसका प्रयोग विशिष्ट धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से होता रहा है। यद्यपि इस पर विशेष अध्याय नहीं है, लेकिन यह लोक परंपराओं की समग्र संरचना के अंतर्गत एक अहम कड़ी के रूप में सामने आती है।

इस पुस्तक से यह भी ज्ञात होता है कि अंग की कई परंपराएँ आज प्रयोग में नहीं हैं, फिर भी उनका दस्तावेजीकरण अत्यंत आवश्यक है ताकि सांस्कृतिक पहचान संरक्षित रह सके। अतः वर्तमान शोध का एक मुख्य उद्देश्य भी इसी भावभूमि पर आधारित है — जो परंपरा अब प्रचलन में नहीं है, उसे समझना, संरक्षित करना और उसे पुनः लोकचेतना में स्थापित करना

02.डॉ. दशरथ ओझा की पुस्तक "हिंदी नाटक का उद्भव और विकास"

"हिंदी नाटक का उद्भव और विकास" हिंदी रंगमंच और लोक नाट्य परंपराओं को समझने के लिहाज से एक जरूरी और असरदार किताब है। इस पुस्तक में उन्होंने सिर्फ आधुनिक हिंदी नाटक के विकास की बात नहीं की, बल्कि देश के अलग-अलग हिस्सों में फैली लोक नाट्य परंपराओं पर भी गहराई से चर्चा की है। वो यह बताने की कोशिश करते हैं कि चाहे नौटंकी हो, तमाशा हो, भवाई, यक्षगान या फिर बिहार का बिहुला–विषहरी लोक नाटक, सबमें एक गहरा जुड़ाव है — सबका सिरा जनता से, जनजीवन से और उसकी आस्था से जुड़ा हुआ है।

डॉ. ओझा का एक खास नजरिया यह है कि हर लोक नाटक में कहानी, गीत, अभिनय और धार्मिक विश्वास आपस में गुथे रहते हैं, और यही बात इन्हें ज़िंदा बनाती है। उन्होंने यह भी दिखाया है कि किस तरह अलग-अलग राज्यों की लोक परंपराएँ, अलग दिखने के बावजूद, भाव के स्तर पर एक जैसी होती हैं — कहीं देवी की पूजा, कहीं वीर गाथा, तो कहीं प्रेम और बलिदान की कथा। यही बात बिहुला–विषहरी लोक नाटक को

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

भी देश की दूसरी लोक परंपराओं से जोड़ती है।

पुस्तक से यह समझ आता है कि लोक नाटक सिर्फ मंच का हिस्सा नहीं है, वो गाँव की संस्कृति, रीति-रिवाज, और लोक विश्वासों का आईना है। डॉ. ओझा मानते हैं कि इन परंपराओं में न सिर्फ मनोरंजन है, बल्कि सामाजिक शिक्षा और सांस्कृतिक चेतना भी छिपी है। उन्होंने यह भी चेताया है कि अगर इन लोक विधाओं पर ध्यान नहीं दिया गया, तो ये धीरे-धीरे खत्म हो जाएँगी।

इस किताब से बिहुला–विषहरी लोक नाटक जैसे रूपों को समझने का एक बड़ा नजरिया मिलता है — यह कि यह नाटक अकेला नहीं, बल्कि पूरे देश की लोक परंपरा की एक मजबूत कड़ी है।

03. आलोक कुमार की पुस्तक "मंशा महात्म्य"

डॉ. आलोक कुमार की किताब "मंशा महात्म्य" में बिहुला–विषहरी की लोक गाथा को बहुत ही सहज ढंग से लोककथा की तरह सुनाया गया है। इसमें कोई जटिल भाषा या विद्वता का बोझ नहीं है, बल्कि जैसे गांव के बड़े-बुजुर्ग किसी कथा को पीढ़ियों से सुनाते आए हैं, उसी अंदाज़ में यह पूरी किताब लिखी गई है।

लेखक ने मंशा देवी के रूप, उनके क्रोध, उनके आशीर्वाद और उनके साथ जुड़ी बिहुला की पीड़ा और संघर्ष को लोक परंपरा के नजरिए से दिखाया है। इस पुस्तक की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें बिहुला–विषहरी की कहानी को देव-पूजा या धर्म तक ही सीमित नहीं रखा गया, बल्कि इसे उस रूप में दिखाया गया है जैसे ये कहानियाँ गाँव के लोगों के जीवन, सोच और सामाजिक ढांचे में रची-बसी हैं।

डॉ. आलोक ने जिस तरह से लोकविश्वास, लोकभाषा, और लोकधर्मी चित्रण को इस कथा में शामिल किया है, वह इसे सिर्फ धार्मिक किताब नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दस्तावेज बना देता है। इसमें नाटकीयता है, भावनाएँ हैं, और लोक जीवन की झलक भी साफ-साफ दिखाई देती है।

इस किताब से यह बात भी सामने आती है कि बिहुला–विषहरी की लोक परंपरा सिर्फ पूजा नहीं, बल्कि एक जीती-जागती विरासत है, जो पीढ़ियों से लोग अपने दुःख–सुख में जीते हैं। लोक कलाकारों के अभिनय, गीत, और मूर्तियों के साथ यह गाथा आज भी जीवंत है।

इसी वजह से "मंशा महात्म्य" को लोक गाथा के संदर्भ में एक मूल स्रोत माना जा सकता है, खासकर जब बात बिहुला–विषहरी जैसे लोक आस्था से जुड़ी परंपरा को समझने की हो।

04. अंगिका.कॉम (वेव साइट)

बिहुला–विषहरी लोक परंपरा से जुड़ी जानकारी आज भी बहुत कम लोगों को मालूम है। लेकिन कुछ किताबों और ऑनलाइन स्रोतों ने इस दिशा में बड़ा काम किया है।

डॉ. अमरेंद्र की किताब "अंग लोक संस्कृति और मंजूषा कला" में अंग प्रदेश की कई पुरानी परंपराओं की चर्चा की गई है — खासकर उन पर, जो अब धीरे-धीरे गायब होती जा रही हैं। उन्होंने बताया है कि किस तरह बिहुला–विषहरी की कथा, मंजूषा कला, लोक गीत, पूजा-विधि और पुरानी रीतियाँ आज भी लोगों की याद में ज़िंदा हैं, लेकिन अब पहले जैसी दिखती नहीं। किताब पढ़कर समझ में आता है कि जो चीज़ें अब गांव में दिखाई नहीं देतीं, उनका इतिहास कितना गहरा और भावनात्मक रहा है।

इसके अलावा, Angika.com एक ऐसी वेबसाइट है जो अंग क्षेत्र से जुड़ी हुई लोक परंपराओं, कलाकारों

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

और सांस्कृतिक जानकारी को लोगों तक पहुँचाने का काम कर रही है। इस वेबसाइट पर लोक कला से जुड़े लेख मिलते हैं, कलाकारों का परिचय मिलता है, और यह भी पता चलता है कि अब अंग क्षेत्र में क्या बचा है और क्या धीरे-धीरे खत्म हो रहा है। ये चीज़ें शोध के लिए बहुत मददगार साबित होती हैं। यहाँ से लोक नाटक, पारंपरिक पूजा, बिहुला–विषहरी की कथा और परंपरागत मूर्ति निर्माण जैसी चीज़ों पर ठोस जानकारी मिलती है — और वो भी उस तरह से जैसी गांव में लोग बोलते-समझते हैं।

किताबों के साथ-साथ ऐसे ऑनलाइन स्रोत भी आज के समय में जरूरी हो गए हैं, जिससे लोक कला से जुड़ी चीज़ें सिर्फ संग्रहालय में ही नहीं, लोगों की बातों और लेखन में भी बनी रहें।

05. दैनिक भास्कर (वेव पेज आर्टिकल)

दैनिक भास्कर में छपे एक वेब पेज आर्टिकल में अंग प्रदेश को लेकर एक बड़ी दिलचस्प बात कही गई है — इसमें बताया गया है कि समुद्र मंथन जैसी पौराणिक घटना का संबंध भी अंग क्षेत्र से जुड़ता है। लेखक ने यह दिखाने की कोशिश की है कि कैसे अंग प्रदेश सिर्फ लोक कला और रीति–रिवाजों के लिए ही नहीं, बल्कि धार्मिक और पौराणिक महत्त्व के लिहाज़ से भी बहुत खास रहा है।

इस लेख में जिन लोक मान्यताओं और कहानियों का ज़िक्र हुआ है, वे दिखाती हैं कि यहां के लोगों की धार्मिक कल्पना और सांस्कृतिक परंपराएं कितनी गहराई से रची-बसी हैं। जब लोग मानते हैं कि समुद्र मंथन का अमृत घट यहां कहीं गिरा था, तो इसका मतलब साफ है कि इस ज़मीन से उनकी आस्था बहुत गहराई से जुड़ी हुई है।

इस संदर्भ में जब हम बिहुला–विषहरी जैसी लोक परंपरा या मूर्तिकला की बात करते हैं, तो यह समझ आता है कि यहां की लोक कला भी उसी आस्था की ज़मीन से निकली है। मूर्तियाँ बनाना, देवी विषहरी की पूजा करना, नाटक के दौरान दर्शकों का भावविभोर हो जाना — ये सब उस लोक मानस का हिस्सा हैं जो सदियों से इन कहानियों को जी रहा है।

दैनिक भास्कर का यह लेख इस बात को मजबूती देता है कि अंग प्रदेश की लोक परंपराएं सिर्फ रीति नहीं हैं, वे लोगों की सांस्कृतिक चेतना का जीवंत हिस्सा हैं, और उनका जिक्र आधुनिक मीडिया में होना इस बात का संकेत है कि लोग अब फिर से अपनी जड़ों की ओर देखने लगे हैं।

06. "फेमिनिज्म इन इंडिया" वेव पेज (बिहुला विषहरी के माध्यम से नारी सशक्तिकरण पर प्रकाश)

"Feminism in India" वेबसाइट पर प्रकाशित एक लेख में बिहुला–विषहरी कथा को नारी सशक्तिकरण की एक मिसाल के रूप में देखा गया है। लेख में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि कैसे बिहुला जैसी स्त्री, जिसने अपने पति को नाग द्वारा मरे जाने के बाद भी हार नहीं मानी, समाज और ईश्वर – दोनों से टकराने का साहस किया।

बिहुला को अक्सर एक श्रद्धालु पत्नी के रूप में देखा गया है, लेकिन इस लेख में यह बताया गया है कि वह सिर्फ पतिके लिए व्रत रखनेवाली महिला नहीं थी, बल्कि वह एक ऐसी स्त्री थी जिसने अपनी किस्मत खुद लिखी। वो नौका पर बैठकर अकेले विषलोक की यात्रा पर निकलती है, देवताओं से बहस करती है, उन्हें झुकने को मजबूर करती है – ये सब बातें उसकी अंतर्निहित शक्ति और जिद को दिखाती हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

लेख में यह भी कहा गया है कि बिहुला की कथा को हम परंपराओं में बंधी नारी की छवि से अलग, एक संघर्षशील और निर्णायक स्त्री के रूप में भी देख सकते हैं। वह सिर्फ एक देवी भक्त नहीं है, बल्कि अपने पति को बचाने की ठान लेनेवाली, रास्ते की हर रुकावट को पार करनेवाली एक आम स्त्री की असाधारण तस्वीर भी है।

इस प्रकार, यह लेख दिखाता है कि लोककथाओं और मिथकों में भी नारी शक्ति के बीज छिपे होते हैं – बस उन्हें देखने और समझने की जरूरत है। बिहुला की कथा आज भी महिलाओं को यह भरोसा देती है कि भय, हार और नियम – किसी के आगे झुकना ज़रूरी नहीं, अगर इरादा मजबूत हो।

07. "Hello @manjushakala.com" (वेब साइट)

"Hello @manjushakala.com" ऐसी ही एक वेबसाइट है, जहाँ बिहुला–विषहरी की कहानी और मंजूषा कला को बड़े ही आत्मीय ढंग से बताया गया है।

इस साइट पर साफ-साफ समझ में आता है कि बिहुला–विषहरी की कथा सिर्फ एक पुरानी कहानी नहीं है, बल्कि अंग क्षेत्र की महिलाओं की आस्था, संघर्ष और उम्मीदों से जुड़ी परंपरा है। कहानी के साथ-साथ वहाँ मंजूषा चित्रकला की भी बात की गई है — वो चित्रकला जो किसी ज़माने में बेटियों की शादी-ब्याह से लेकर पूजा-पाठ तक, हर मौके पर दीवारों और मंजूषा पेटियों पर उकेरी जाती थी।

इस साइट पर पढ़ने से ये भी साफ होता है कि बिहुला–विषहरी की मूर्तियाँ और चित्र केवल धार्मिक प्रतीक नहीं हैं, बल्कि उनमें एक सामाजिक संदेश भी छिपा होता है — जैसे स्त्री की शक्ति, व्रत की ताकत, और प्रेम की जीत।

वेबसाइट पर जो जानकारी दी गई है, वो किताबों वाली बोझिल भाषा में नहीं, बल्कि सीधी-सादी बातों और किस्सों के ज़रिए है — जिससे लोककला से जुड़े लोग और आम पाठक भी जुड़ पाते हैं। इस वेबसाइट की सबसे अच्छी बात यह है कि यह परंपरा को नए ज़माने के डिजिटल रूप में सामने ला रही है, जिससे युवाओं को भी इसे समझने में आसानी हो रही है।

इसलिए, इस वेबसाइट की सामग्री मेरे शोध कार्य के लिए मूल समझ बनाने में मददगार रही — खासकर इस बात को समझने में कि कला केवल रंग या आकार नहीं, बल्कि समाज की सोच और भावना की गूंज होती है।

08. Zeenews.India.com (बिहुला कथा तथा कलश यात्रा पर प्रकाश)

Zee News India की वेबसाइट पर प्रकाशित एक रिपोर्ट में बिहुला–विषहरी की कथा और उससे जुड़ी परंपराओं का जिक्र बड़े ही सहज और जनभाषा में किया गया है। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि कैसे आज भी बिहार के भागलपुर, मुंगेर और पूर्णिया जैसे इलाकों में बिहुला विषहरी की कलश यात्रा बड़े ही उत्साह और श्रद्धा के साथ निकाली जाती है।

इस यात्रा में गाँव की महिलाएँ पारंपरिक वस्त्र पहनकर, सिर पर कलश लेकर गीत गाती हुई निकलती हैं और पूरे गाँव में एक आध्यात्मिक वातावरण बनता है। यही नहीं, इस मौके पर बिहुला की कहानी भी लोकगायन और नाटक के रूप में सुनाई और दिखाई जाती है। यह सब आज के दौर में भी गाँव-समाज को

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

जोड़ने वाला मजबूत धागा है।

वेबसाइट पर यह भी बताया गया कि कैसे लोग इस अवसर पर अपने दुखों से मुक्ति पाने, परिवार की सुख-शांति और बच्चों की सलामती के लिए विषहरी माता से प्रार्थना करते हैं। रिपोर्ट में लोक आस्था की गहराई, सामूहिक सहभागिता और परंपरा की निरंतरता को प्रमुखता दी गई है।

यह वेब-स्रोत हमें यह समझने में मदद करता है कि बिहुला–विषहरी से जुड़ी परंपराएँ आज भी केवल कथा नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन का हिस्सा हैं। इससे यह भी साबित होता है कि लोक कलाएँ केवल अतीत की बात नहीं हैं, बल्कि आज के लोगों के जीवन में भी उनका गहरा असर है।

09. Utsav.gov.in (बिहुला लोक पर्व पर प्रकाश)

भारत सरकार के सांस्कृतिक पोर्टल Utsav.gov.in पर बिहुला विषहरी लोक पर्व को अंग प्रदेश की एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा के रूप में दर्ज किया गया है। इस वेबसाइट में बताया गया है कि कैसे यह पर्व खासकर भागलपुर, मुंगेर और पूर्णिया जैसे जिलों में आज भी बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। यह पर्व सिर्फ पूजा-पाठ का मौका नहीं होता, बल्कि गाँव की पूरी बिरादरी के मेल-जोल, साझी भावना और लोक कला की झलक का जीवंत प्रमाण बनता है।

Utsav.gov.in पर जो जानकारी मिलती है, उससे साफ होता है कि बिहुला का लोक पर्व कोई साधारण आयोजन नहीं, बल्कि लोकनाट्य, मूर्तिकला, संगीत, और रीति-रिवाजों का एक समेकित उत्सव होता है, जहाँ लोक कलाकार और आम ग्रामीण मिलकर एक समूची सांस्कृतिक दुनिया रचते हैं। देवी विषहरी की पूजा, बिहुला की कथा, और लखिन्दर के पुनर्जीवन की लोकगाथा — इन सबका मंचन और मूर्ति पूजन साथ-साथ चलता है, जिससे नाटक और मूर्तिकला आपस में जुड़ जाते हैं।

यह वेबसाइट यह भी बताती है कि लोग चंदा जुटाकर खुद ही आयोजन करते हैं, और मूर्तिकार कई महीने पहले से मूर्तियाँ बनाना शुरू कर देते हैं। इससे यह साफ होता है कि मूर्तिकला न केवल धार्मिक श्रद्धा का प्रतीक है, बल्कि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कलाकारों की रोज़ी-रोटी से भी जुड़ी हुई है।

10. Prabhatkhabar.com पर आनंद शेखर द्वारा लिखे "बिहुला कथा, इसका महत्व और लोक पर्व से जुड़ी जानकारी"

आनंद शेखर द्वारा लिखा गया लेख "बिहुला कथा, इसका महत्व और लोक पर्व से जुड़ी जानकारी" एक बहुत काम की सामग्री के रूप में सामने आता है।

इस लेख में लेखक ने बिल्कुल सरल भाषा में बताया है कि बिहुला की कहानी सिर्फ एक औरत की नहीं है, बल्कि पूरी लोक संस्कृति की पहचान है। उन्होंने यह साफ तौर पर बताया है कि कैसे इस कथा का जुड़ाव श्रावण-भादो महीने के विशेष दिनों से होता है, जब गाँव-गाँव में विषहरी की पूजा, मेला और लोकनाटक होते हैं।

लेख में यह भी सामने आता है कि बिहुला की कथा केवल पूजा पाठ तक सीमित नहीं, बल्कि समाज की सोच, आस्था और स्त्री की ताकत को भी दर्शाती है। आनंद शेखर ने इस बात को अच्छे से समझाया है कि कैसे आज भी इस कथा का मंचन होता है, और लोग इसे भाव-विभोर होकर सुनते और देखते हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

इस लेख से एक और बात साफ होती है — कि बिहुला कथा कोई 'पुरानी' या 'बीती हुई चीज' नहीं, बल्कि आज भी लोगों की ज़िंदगी में उसका गहरा असर है। यही वजह है कि गाँव के लोग खुद चंदा करके आयोजन कराते हैं, और लोक कलाकार, मूर्तिकार, गायक सब मिलकर इसे जीवित रखते हैं।

इस लेख का एक बड़ा योगदान यह है कि इसने आम पाठकों को भी लोक परंपरा से जोड़ा है, और डिजिटल दुनिया में इसकी लोकप्रियता और प्रासंगिकता को बढ़ाया है। यह उन शोधार्थियों के लिए उपयोगी है जो लोक संस्कृति को सिर्फ किताबों से नहीं, लोगों के बीच जाकर महसूस करना चाहते हैं।

11. Folkartpedia.com पर मंजूषा आर्ट की जानकारी, चित्रकारी दृष्टिकोण से

जब मंजूषा कला की बात होती है, तो सिर्फ रंग-बिरंगे चित्र ही नहीं, बल्कि अंग क्षेत्र की एक पूरी लोकगाथा आंखों के सामने उतर आती है। Folkartpedia.com जैसे वेबसाइट पर इस कला के बारे में बड़ी ही सुलझी हुई, सीधी-सरल भाषा में जानकारी दी गई है। यहाँ मंजूषा को महज एक "चित्रकला" न मानकर, उसे "कथा कहने वाली कला" बताया गया है – और सच कहें तो यही उसकी सबसे बड़ी खूबी है।

इस साइट पर बताया गया है कि मंजूषा चित्रों में सिर्फ फूल-पत्तियाँ या देवी-देवता नहीं होते, बल्कि इसमें एक पूरी कहानी चलती है – विषहरी की गाथा, जिसमें बहनें, नाग, नदी, नाव, और समाज का डर-संकोच सब कुछ रंगों के ज़रिये दिखता है। ये चित्र एक तरह से लोक मन की भाषा हैं – जो बोलती नहीं, लेकिन बहुत कुछ कह जाती हैं।

Folkartpedia पर मंजूषा कला को देखने का नजरिया भी थोड़ा अलग है – वहाँ यह ज़ोर दिया गया है कि कैसे हर आकृति (जैसे – सर्प, नाव, मछली, अरिपन) का कोई ना कोई लोकार्थ है। और कैसे इसे औरतें अपने विश्वास से, और कलाकार अपनी कल्पना से सजाते रहे हैं। ये चित्र एक सजावट नहीं, बल्कि एक लोकसंस्कार हैं – जो हर बार भोज-त्योहार या पूजा में नई शक्ल में उभरते हैं।

इस साइट की खास बात ये भी है कि यह मंजूषा को सिर्फ संग्रहालय में रखी चीज़ नहीं मानता, बल्कि इसे अब भी जिंदा लोक कला कहता है – जो भले ही शहरों में कम दिखे, पर गाँव में अब भी अपने अंदाज़ में ज़िंदा है। Folkartpedia ने कुछ कलाकारों की कहानी भी बताई है, जो मंजूषा को नया रूप दे रहे हैं – जैसे पोस्टर, टी-शर्ट, किताबों के कवर आदि में इस्तेमाल करके। यह बदलाव दर्शाता है कि मंजूषा सिर्फ दीवार की चीज नहीं, बल्कि विचार की चीज है।

इस तरह की जानकारी लोक कलाओं की समझ को सिर्फ 'शोध' तक नहीं, बल्कि 'संवेदनशीलता' तक ले जाती है। और यही वो बात है जो इस शोध को और पक्का आधार देती है – कि बिहुला–विषहरी परंपरा केवल पूजा नहीं, बल्कि कला, संस्कृति और लोक चेतना का मिश्रण है।

12. Hindi.news18.com अंग क्षेत्र और बिहुला के जुड़ाव पर प्रकाश

Hindi.news18.com पर प्रकाशित लेखों में अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक परंपराओं और बिहुला–विषहरी कथा के गहरे जुड़ाव को बखूबी दिखाया गया है। इन लेखों में यह साफ झलकता है कि भागलपुर, मुंगेर, पूर्णिया जैसे इलाके न सिर्फ बिहुला की गाथा को धार्मिक तौर पर मानते हैं, बल्कि इसे अपने संस्कार और पहचान से जोड़कर भी देखते हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

इस ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से पता चलता है कि आज भी 15 अगस्त के आस-पास इन इलाकों में गाँव के लोग आपस में चंदा कर के मूर्तियाँ बनवाते हैं, मेला लगता है, और रात-भर लोकनाटक होता है। यह सब कुछ केवल धार्मिक भावना भर नहीं, बल्कि लोक संस्कृति की जीवंत परंपरा को ज़िंदा रखने का जरिया भी है।

यहाँ तक कि रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि बिहुला–विषहरी की कथा आज भी लोगों के मन में वैसी ही बसी हुई है, जैसे कभी पीढ़ियों पहले थी। लोग इसे सिर्फ एक देवी कथा नहीं, बल्कि एक बेटी, एक पत्नी और एक औरत की लड़ाई के रूप में देखते हैं, जिसने अपने पति को नागदंश से मरा देख, विषहरी को स्वर्ग में जाकर मना लिया। इस दृष्टिकोण से यह कथा लोक समाज की आस्था और स्त्री शक्ति का प्रतीक बन जाती है।

इस साइट के माध्यम से यह भी समझ में आता है कि लोक मूर्तिकला, लोक नाटक, और लोक गीत — ये तीनों चीजें मिलकर ही इस परंपरा को मजबूत बनाती हैं। ऐसे लेख आज की पीढ़ी को यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि जिन परंपराओं को हम 'पुरानी' मानकर भुला रहे हैं, उनमें हमारी पहचान, एकता और लोक-बोध छिपा है।

इस तरह की रिपोर्टें शोधकर्ता को यह भरोसा देती हैं कि बिहुला–विषहरी परंपरा पर काम करना आज भी जरूरी है — क्योंकि यह परंपरा अभी मरी नहीं है, बस उसे थोड़ा सहेजने की ज़रूरत है।

13. Livehindustan.com (बिहुला पूजन के विधि विधान की चर्चा)

लोक परंपराओं को समझने के लिए अखबार और डिजिटल माध्यम भी अब एक मजबूत स्रोत बनते जा रहे हैं। LiveHindustan.com जैसी समाचार साइटों पर अक्सर बिहुला पूजन से जुड़ी ख़बरें और परंपरागत विधियों की जानकारी दी जाती है। इस साइट पर प्रकाशित एक लेख में बताया गया कि सावन महीने के अंत में खासकर भागलपुर, मुंगेर, कटिहार, पूर्णिया और आस-पास के क्षेत्रों में बिहुला पूजन की धूम होती है।

इस पूजा की खास बात यह होती है कि घर की महिलाएँ रात भर जागकर देवी विषहरी की कथा सुनती हैं, दीये जलाकर मंजूषा सजाती हैं और व्रत रखकर पूजा करती हैं। मिट्टी की बनी मूर्तियाँ, गन्ना, फूल, पंखा, रंगीन धागे, बांस की बनी चीजें – सब मिलकर एक पूरा लोक अनुष्ठान बनाते हैं। कहीं-कहीं तो गाँव के लोग आपस में चंदा करके बड़ी मूर्तियाँ बनवाते हैं, मेले लगते हैं और लोकनाट्य का भी आयोजन होता है।

LiveHindustan.com में यह भी उल्लेख किया गया कि बिहुला की कथा सिर्फ एक धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक चेतना, स्त्री-संघर्ष, और लोक आस्था की मिसाल है। यह परंपरा आज भी बहुत गहराई से लोगों के दिल में बसी हुई है। हाँ, यह ज़रूर है कि अब इसके रूप में कुछ बदलाव आया है — पहले जहाँ हर घर में पूजा होती थी, अब कुछ जगहों पर सामूहिक पूजा का चलन बढ़ गया है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

इस तरह के समाचार स्रोत यह साफ़ बताते हैं कि बिहुला पूजन केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि पूरे समाज की साझी सांस्कृतिक स्मृति है, जिसे लोग हर साल न सिर्फ निभाते हैं, बल्कि जीते भी हैं।

14. Kavitakosh.org (संपूर्ण बिहुला लोकगाथा पर प्रकाश)

बिहुला–विषहरी की लोकगाथा को समझने के लिए Kavitakosh.org एक बेहतरीन स्रोत बनकर सामने आता है। इसमें बिहुला की पूरी गाथा को सिलसिलेवार और विस्तार से दर्ज किया गया है, जिससे न केवल कहानी समझ में आती है, बल्कि उसके पीछे छिपी लोक-आस्था, सामाजिक मान्यताएँ और पारिवारिक संबंधों की गहराई भी सामने आती है।

इस वेबसाइट पर मौजूद बिहुला गाथा पढ़ने से यह साफ़ होता है कि यह कोई आम कहानी नहीं है — इसमें दर्द है, विश्वास है, विद्रोह भी है और भक्ति भी। किस तरह एक स्त्री (बिहुला) अपने पति की जान के लिए नदी, नाग, स्वर्ग और यमराज तक का सफर करती है, यह गाथा आज भी लोगों के मन में रची-बसी है। Kavitakosh पर गाथा कविता के रूप में भी दर्ज है और कथा के रूप में भी, जिससे यह समझने में आसानी होती है कि कैसे इसे गाँव-गाँव में गीतों, काव्य और नाट्यरूप में गाया या मंचित किया जाता रहा है। लोकभाषा की मिठास, नारी के साहस और समाज की परंपराएँ – सब कुछ इसमें जुड़ा है।

शोध की दृष्टि से यह गाथा मूल स्रोत जैसा है, क्योंकि इसमें लोक का वह स्वरूप मिलता है जो किताबों की भाषा में अक्सर छूट जाता है। यहाँ के शब्दों में गाँव की मिट्टी की खुशबू है, और वह सहजता है जो लोक साहित्य को जीवंत बनाती है।

Kavitakosh.org से यह भी पता चलता है कि बिहुला केवल एक पात्र नहीं, बल्कि लोक जीवन की एक प्रतीक बन चुकी है – वह औरत जो हार नहीं मानती, जो अपनों के लिए देवताओं से भी लड़ जाती है। इस गाथा में जो भाव हैं, वही मूर्तियों में उतरते हैं, वही नाटक में दिखाई देते हैं, और वही समाज की चेतना में बसे हैं।

शोध गैप (Research Gap):

01. आहार्य अभिनय पर केंद्रित विश्लेषण की कमी
02. लोकनाट्य की आहार्य परंपरा और आधुनिक रंगमंच के बीच संबंध पर शोध का आभाव
03. शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में इसकी अनुपस्थिति

शोध उद्देश्य:

01. यह अध्ययन करना कि "आहार्य अभिनय" की विभिन्न उप-श्रेणियाँ “पुस्त, अलंकार, अंगरचना और सजीव” किस प्रकार बिहुला विषहरी लोक नाटक में प्रयोग की जाती हैं।
02. यह समझना कि सीमित संसाधनों के होते हुए भी लोक कलाकार आहार्य के माध्यम से दैवीय, मिथकीय और भावनात्मक प्रभाव को कैसे मंचित करते हैं।
03. यह प्रस्तावित करना कि बिहुला विषहरी लोकनाटक की आहार्य परंपरा का संरक्षण, दस्तावेज़ीकरण और नयी पीढ़ी में स्थानांतरण कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

शोध प्रश्न :

01. बिहुला विषहरी लोक नाटक में आहार्य अभिनय की कौन-कौन सी उप-श्रेणियाँ प्रयोग की जाती हैं, और उनका मंचीय महत्व क्या है?

(विशेष: पुस्त, अलंकार, अंगरचना, सजीव)

02. सीमित आर्थिक/सामग्री संसाधनों में लोक कलाकार किन-किन तरीकों से दृश्य प्रभाव उत्पन्न करते हैं?

03. क्या इसमें कुछ स्थानीय नवाचार या पारंपरिक शिल्प तकनीकें भी देखी जाती हैं?

04. क्या वर्तमान समय में आहार्य अभिनय की परंपरा संकट में है?

यदि हाँ, तो इसके संरक्षण व पुनरुद्धार के क्या संभावित उपाय हो सकते हैं?

05. क्या आहार्य अभिनय के इन रूपों का प्रयोग नई पीढ़ी के लोक कलाकारों में स्थानांतरित हो रहा है? या इसमें अंतराल और विस्मृति देखी जा रही है?

06. क्या यह संभव है कि बिहुला विषहरी लोकनाटक की आहार्य परंपरा को दस्तावेज़ीकृत कर भविष्य के लोक-शिक्षण या प्रदर्शन की सामग्री बनाया जाए?

शोध पद्धति (Methodology):

इस शोध में खुला शोध (Open-ended Research) एवं गुणात्मक शोध (Qualitative Research) पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार की शोध पद्धति में पूर्वनिर्धारित उत्तरों के बजाय खुली बातचीत और अनुभवों पर आधारित सूचनाओं को एकत्र किया गया है।

बिहुला विषहरी कथा की सांस्कृतिक, धार्मिक, और सामाजिक व्याख्या के लिए गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया।

बिहुला-विषहरी लोक कला और पूजा से संबंधित प्राचीन ग्रंथों, लोककाव्य, और आधुनिक शोध पत्रों का अध्ययन।

क्षेत्रीय अध्ययन (Field Study), बिहार के विभिन्न क्षेत्रों (जैसे भागलपुर, मुंगेर, पूर्णिया) में बिहुला-विषहरी पूजा के आयोजन का अवलोकन और समुदाय से साक्षात्कार। भागलपुर और मुंगेर जैसे प्रमुख स्थानों पर बिहुला-विषहरी पूजा के आयोजनों का उदाहरणात्मक विश्लेषण किया गया है ।

नमूना संग्रह :

शोधकर्ता ने मुंगेर के लोक कलाकार के साक्षात्कार डेटा का सर्वप्रथम संग्रह किया तथा श्रृंखला बद्ध तरीके से नमूना को संग्रहित किया।

निष्कर्ष

बिहुला बिषहरी लोक गाथा भारतीय लोक कला परंपरा की एक सशक्त और जीवंत धारा है, जिसने न केवल अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान गढ़ी, बल्कि अन्य लोक कलाओं के विकास और पीढ़ी दर पीढ़ी उनके हस्तांतरण का माध्यम भी बनी। यह केवल एक कथा का मंचन नहीं, बल्कि सामुदायिक स्मृतियों, धार्मिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों का ऐसा संगम है, जो आज भी लोक कलाकारों और प्रशिक्षित रंगकर्मियों के संयुक्त प्रयास से मंच पर जीवित है।

मंजूषा कला, जो कभी पूरे अंग क्षेत्र का गौरव और सांस्कृतिक प्रतीक थी| अब अपने पारंपरिक पर्व और सीमित अवसरों तक सिमट गई है। लोगों की घटती रुचि और अभ्यास में कमी इसके संरक्षण के लिए गंभीर चिंता का विषय है।

बिहुला बिषहरी लोक नाटक में आहार्य अभिनय की सभी उपश्रेणियाँ : पुस्त, अलंकार, अंगरचना और सजीव पूर्णता के साथ प्रयुक्त होती हैं। मंच सज्जा के माध्यम से गंगा नदी, स्वर्गलोक, देवी का थान, नाव और शवयात्रा जैसे प्रतीकों को स्थानीय सामग्रियों, कपड़े, बांस, मिट्टी और रंगीन वस्त्र से जीवंत रूप दिया जाता है। वस्त्र-भूषा और आभूषण पात्रों की पहचान और सांस्कृतिक प्रतीकों का दर्पण होते हैं; देवी बिषहरी के नागमुकुट और सर्पमाला से लेकर बिहुला की लाल साड़ी, सिंदूर और पायल तक, हर तत्व एक कथा कहता है। कृत्रिम शरीर संरचना में विदूषक का बड़ा पेट, बिषहरी के अनेक हाथ, ब्रह्मा के चार सिर और शिव का तीसरा नेत्र जैसे रूप दर्शकों को आश्चर्य और भावानुभूति से जोड़ते हैं। वहीं, जीवित तत्वों का प्रयोग कलाकारों की मुद्राएँ, नेत्रों की भाषा और शरीर की अभिव्यक्ति दैवी स्वरूपों को मंच पर सजीव बना देता है।

सीमित संसाधनों के बावजूद कलाकार पारंपरिक सामग्री "बांस, लकड़ी, थर्माकोल और रंगीन कपड़े" का प्रयोग करते हैं, और साथ ही LED लाइट, मेकअप तथा साउंड सिस्टम जैसे आधुनिक साधनों को भी अपनाते हैं। इसके बावजूद प्रस्तुति की आत्मा परंपरा में ही निहित रहती है, जिसे कलाकार अपनी कल्पनाशक्ति और अनुभव से प्रभावशाली बनाते हैं।

फिर भी इस परंपरा के संरक्षण में कई चुनौतियाँ हैं: लोक पर्व तक सीमित मंचन, वर्ष भर अवसरों का अभाव, आहार्य की तकनीकी जानकारी का न होना, युवा कलाकारों के लिए प्रशिक्षण की कमी, कलाकारों का पलायन और दस्तावेज़ीकरण की अनुपस्थिति, जिसके कारण यह परंपरा अब भी मुख्यतः मौखिक रूप में ही जीवित है।

आवश्यक है कि इसके संरक्षण और संवर्धन के लिए ठोस और संगठित प्रयास किए जाएँ स्थायी मंच उपलब्ध कराना, प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन, शोध और दस्तावेज़ीकरण को बढ़ावा देना, तथा सांस्कृतिक नीतियों के माध्यम से इस कला को समर्थन देना। तभी बिहुला बिषहरी न केवल अतीत की सांस्कृतिक स्मृति रहेगी, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उतनी ही जीवंत और प्रेरणादायी बनी रहेगी।

संभावनाएँ और सुझाव:

विद्यालयों और विश्वविद्यालयोंमें लोक नाट्य और आहार्य की शिक्षा शुरू होनी चाहिए।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

यूथ फेस्टिवल, कॉलेज थिएटर प्रतियोगिताओं में बिहुला बिषहरी जैसे नाटकों को शामिल किया जाए।
स्थायी लोक कला केंद्रों की स्थापना की जाए, जहाँ कलाकार प्रशिक्षण दें और आहार्य निर्माण की परंपरा सिखाई जाए।
डिजिटल माध्यमों से मंचन और निर्माण को रिकॉर्ड कर लोक आभिलेखागार (Archives) तैयार किया जाए।
महिलाओं और युवाओं को आहार्य निर्माण में जोड़ने से यह परंपरा आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से मज़बूत हो सकती है।

निष्कर्षात्मक कथन:

बिहुला बिषहरी लोकनाटक में आहार्य अभिनय, केवल दृश्य सौंदर्य नहीं, बल्कि लोक जीवन, धर्म, सामाजिक मूल्य और सांस्कृतिक चेतना का मूर्त रूप है।
यह लोकनाट्य न केवल मिथकीय कथा का मंचन करता है, बल्कि एक जीवंत दृश्य परंपरा के माध्यम से लोक समाज को सांस्कृतिक उत्तराधिकार सौंपता है।

परिसीमन :

बिहुला-विषहरी लोक कला का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है, तथा अंग प्रदेश (वर्तमान बिहार के कुछ जिले) में इसकी विशेष प्रतिष्ठा है। चूंकि संपूर्ण अंग क्षेत्र बहुत बड़ा है, अतः शोधकर्ता ने अपने अध्ययन के लिए इस क्षेत्र के तीन प्रमुख स्थानों भागलपुर, मुंगेर तथा पूर्णिया - का चयन किया है, इसके अतिरिक्त, बिहुला-विषहरी लोक नाटक के अभिनय के चार अंगों "आंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक" में से आहार्य अभिनय को शोध के लिए चयनित किया । शोध को लक्षित एवं गहन बनाने हेतु शोधकर्ता ने अन्य संबंधित कलाओं, अभिनय के तीन अंगों और विविधताओं को अध्ययन के परिधि से बाहर रखा है ताकि अनुसंधान केन्द्रित, गहन और उद्देश्यपूर्ण रहे।

संदर्भ सूची

Amrendra. The first season, samiksha prakashan, 2018/Amrendra, The first season, Samiksha Prakashan, 2012/

Anand A, https://feminisminindia.com/2022/07/15/how-do-folklore-inculcateprotests-a-case-study-of-angika-folk-culture/, Jul 2022, feminisminindia.com/

Bhaskar D,https://www.bhaskar.com/news/TRA-samudra-manthan-mandar-parvat-in-bihar-news-hindi5494126-PHO.htm/

Ojha D, Thefirst season, Rajpal Prakashan, 2012./ Kumar A, The first season, Hema devi Prakashan, 2021.

https://www.angika.com/p/history-of-ang-anga-angdesh.html?m=1

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

http://www.manjushakala.in/manjusha-art/story-of-bihula-bishari/

https://www.google.com/amp/s/zeenews.india.com/hindi/india/bihar-jharkhand/patna/know-the-full-story-of-bihula-vishhari-what-is-the-importance-of-bari-kalash/1307472/amp

https://utsav.gov.in/view-event/bihula-festival

https://www.google.com/amp/s/www.prabhatkhabar.com/state/bihar/bihula-vishari-puja-started-with-devotion-know-its-story-axs/amp

https://www.folkartopedia.com/oral-traditions/folklores/folklore-angika-bihula-bisahari-bhagalpur-sk/

https://www.google.com/amp/s/hindi.news18.com/amp/news/bihar/if-he-will-worship-you-then-you-will-get-fame-know-the-story-of-famous-bihula-vishhari-6950011.html

https://www.livehindustan.com/bihar/katihar/story-bihula-vishhari-puja-on-17th-devotees-engaged-in-preparation-4348272.html

http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%AC%E0%A4%BF%E0%A4%B9%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A4%BE_%E0%A4%95%E0%A4%A5%E0%A4%BE_/_%E0%A4%85%E0%A4%82%E0%A4%97%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A4%BE_%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%95%E0%A4%97%E0%A4%BE%E0%A4%A5%E0%A4%BE